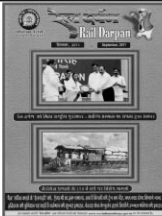


आपके पत्र प्यारे-प्यारे : आपकी भावनाओं के हरकारे

प्रिय पाठकों,

'रेल दर्पण' पत्रिका के बारे में आपके पारस्वी विचारों की हम तक पहुँचाने वाली आत्मीय प्यारी-प्यारी चिट्ठियों हमारे प्रवासी के प्रतिक्रिया का आईना भी हैं और इन्हीं से हमें आगे बढ़ते रहने की ताकत भी मिलती है।

सितम्बर, 2011 में प्रकाशित 'नैरेगेज पर विशेष सागरी' की तारीफ और समालोचना करने वाली ठेरा सारी चिट्ठियों हमें मिली हैं। इन्हीं में से कुछ चुनिंदा खतों तथा समाचार पत्रों में प्रकाशित समीक्षाओं का प्रकाशन हम इस 'पाठक-पीठिका' स्तम्भ के अंतर्गत कर रहे हैं। इस बात की खास बात यह है कि 'नवभारत', 'प्रातःकाल', 'हमारा महानगर', 'नई दुनिया', 'दैनिक



भास्कर', 'चुनारत वैभव', 'यशोभूमि' और 'जागरूक टाइम्स' जैसे प्रतिष्ठित हिंदी एवं अन्य भाषाओं के सप्ताहिक पत्रों में प्रकाशित समीक्षाओं में 'रेल दर्पण' के 'नैरेगेज पर विशेष सागरी' की खुलकर तारीफ की गयी है, यही कुछ वरिष्ठ अधिवारियों, सम्पादकों एवं पत्रकारों ने स्वयं पत्र प्रेषित कर 'रेल दर्पण' पत्रिका की काफ़ी सराहना है।

'रेल दर्पण' का सम्पादकीय परिवार आप सभी के प्रति अपनी विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करता है। आपकी भावनाओं के हरकारे आपके पत्रों का सिलसिला ऐसे ही जारी रहे, जहाँ हमारी गंमल कमजोर है।

प्रधान सम्पादक

दैनिक भास्कर, इन्दौर में प्रकाशित समीक्षा

'रेल दर्पण' के नये अंक की शुरुआत पश्चिम रेलवे के तत्कालीन महाप्रबंधक श्री आर.सी. अग्रवाल के शुभकामना संदेश से होती है। फिर बारी 'रेल दर्पण' के प्रधान सम्पादक एवं मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शरत चंद्रायन के सम्पादकीय की है। इसमें श्री चंद्रायन ने अंतिम से लेकर 'पश्चिम रेलवे' के मौजूदा स्वरूप तक पर विशेष 'दर्पण' दिखाया है, तो श्री अग्रवाल ने अपने विशेष लेख के माध्यम से पश्चिम रेल को मिली उपलब्धियों का विस्तार पूर्वक बखान किया है। 'सामयिक गतिविधियों' के तहत जहाँ महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल के हाथों 'रेल दर्पण' को प्राण राष्ट्रीय पुरस्कार को हाई लाइट किया गया है, (सचमुच, अर्द्ध वार्षिक गृह पत्रिकाओं में 'रेल दर्पण' सर्वश्रेष्ठ है), वहीं भागनगर पर सख्त बंदी और जेलसर आदि स्थानों पर समान छोट-बड़ों समाचारों की चर्चा जानकारी प्रकाशित हुई है। 'नैरेगेज के 150 वर्षों पर लेख' और 'फोटो फीचर' इस पत्रिका के विशेष आकर्षण हैं। 'कथा-कुंज' के अंतर्गत तीन कहानियाँ हैं- 'खुशनुमा एहसास', 'अंगनीआ तुलसी' और 'रात' जिन्हें आप अवश्य पढ़ना चाहेंगे, तो 'व्यंग्य वीथिका' आपको गुदगुदायेगी। आज की आपाधापी में सेहत के लिए सोचने की फुर्सत कहाँ? सो, 'स्वास्थ्य चर्चा' आपके काफी काम आवेगी। वेशक, 'विश्या' में अपिताप के

सचमुच, सर्वश्रेष्ठ है 'रेल दर्पण'

फिल्मी सफ़र की तुकबंदी थोड़ी बोर करती है। हाँ, 'काव्यात्मक अभिव्यक्ति' में प्रस्तुत 'सरस्वती वंदना' सभी विद्या-प्रेमियों के लिए संग्रहीणीय है।

सम्पादक ने 'अभिनेता के हकदार' में अपने विभागीय लोगों की सूची प्रकाशित करके बड़े दिल का परिचय दिया है। इसके अलावा अंग्रेजी की सम्पत्ति 12 पृष्ठों में से एक पर बॉलीवुड सिंगर श्री शान के साक्षात्कार द्वारा सामाजिक संदेश दिलवाने का सराहनीय प्रयास किया गया है। 'सांस्कृतिक हलचल' से ज्ञात होता है कि यात्रियों का सदैव ध्यान रहने वाली पश्चिम रेलवे अपने कर्मचारियों के पनोरन का भी बावजूब ख्याल रखती है। वैसे 'सखियों का संसार' को विस्तार दिया जा सकता था। 'खैर', 'तस्वीर बोलती है...' में हालिया घटनाक्रमों को दर्शाने के साथ-साथ 'पश्चिम रेलवे' ने हमें विशेष फोटो फीचर के जरिये अपनी ऐतिहासिक घरोहरों से रू-ब-रू कराने की सफल कोशिश की है। श्री मधुप पांडेय के क्या कहने? पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर विशेष अतिथि रचनाकार बनकर उन्होंने चूटीले अंदाज में मुकून पहुँचाया है। अंत में- 'रेल दर्पण' की विशेष बात यह रही है कि इसमें प्रूफ की गलतियाँ लगभग नगण्य होती हैं... इस अंक में भी यह विशेषता बरकरार रही है-साधुवाद!

धर्मदत्त प्रताप सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

बुलंद इरादों का स्वर्णिम भविष्य है 'रेल दर्पण'

कौन कहता है, आसाम में सुराख हो नहीं सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछाले यारों! दिल में नेक इरादा हो, मन में दृढ़ इच्छा शक्ति का जन्म हो, तो हिमालय की उँचाइयों को भी लांघा जा सकता है। इसे चरितार्थ कर दिखाया है, पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' के सम्पादक मंडल ने। विगत 12 वर्षों से नये-नये कलेवर में प्रकाशित होने वाली पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' ने अपने अन्य प्रकाशन काल में नित नई उँचाइयों को छूते हुए व्यावसायिक संचार के क्षेत्र में अपनी मुकूलतक एवं रचनात्मक श्रेष्ठता का परचम बुलंदियों पर लहराया है। यही कारण है कि पत्रिका को एसोसिएशन ऑफ बिजनेस कम्प्यूनिटर्स ऑफ इंडिया द्वारा प्रदत्त अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों सहित 25 से अधिक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। इस क्रम में भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित वर्ष 2010-11 की अखिल भारतीय हिंदी गृह पत्रिका प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का राष्ट्रीय पुरस्कार महामहिम राष्ट्रपति डॉ. श्रीमती प्रतिभादेवी सिंह पाटिल द्वारा प्रदान किया गया। इस योग्य ही कहा जायेगा कि जहाँ एक तरफ पश्चिम रेलवे अपनी स्थापना की होरक जयंती तथा देश की पहली नैरेगेज प्रणाली की 150 वीं जयंती मना रही है तब 'रेल दर्पण' को राष्ट्रीय ख्याल से नज़ाज़ जाना, पश्चिम रेलवे के लिए सोने पे सुहागा हो गया है। पत्रिका को देखने से ऐसा लगता है कि सम्पादक मंडल ने वैचारिक संस्कारों को नया आयाम देने में रंज मात्र भी संकोच

नहीं किया है। पत्रिका की उल्लूक सम्पादन शैली, पठनीय सामग्री, आकर्षक साज-सज्जा, काव्यात्मक अभिव्यक्ति, सामयिक गतिविधियाँ, स्वास्थ्य चर्चा, तस्वीर बोलती है, कथा कुंज, व्यंग्य वीथिका, सखियों का संसार, सांस्कृतिक हलचल, फिल्मी हस्तियों का साक्षात्कार जैसे निर्वात सन्ध हफ़ेला की तरह रोचक व ज्ञानवर्द्धक लगे। नैरेगेज के 150 वर्षों पर आधारित फोटो फीचर, पश्चिम रेलवे के मुख्यालय का फोटो फीचर तथा रेलों के बोध चिह्नों पर आधारित विशेष फीचर जहाँ हमें अपने अंतर्गत की याद दिलाते हैं, वहीं दुर्घटना दस्तावेजों की रोचक जानकारी भी देते हैं। कवि श्री आशुकर अरुण ने 'आम व केला' कविता के माध्यम से सम्मान देने व लेने की बात बड़े ही अच्छे ढंग से बताई है। युवा गायक श्री शान का साक्षात्कार युवकों के लिए प्रेरणा स्रोत बना। विशेष अतिथि रचनाकार श्री मधुप पांडे ने अपनी कविताओं के माध्यम से सच के सामने से मुछौटा हट्टाया है, जो काबिले तारीफ है। सम्पूर्ण रूप से यह कहा जा सकता है कि पत्रिका की उच्च स्तरीय गुण-गुणवत्ता, उल्लूक सम्पादन, पठनीय सामग्री एवं आकर्षक कलेवर ने 'रेल दर्पण' को गरिमा, सम्मान और प्रतिष्ठा की पराकाष्ठा पर लाकर खड़ा कर दिया है, जिसके लिए प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन, वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक श्री गजानन महतपुरकर और उनकी सम्पूर्ण सम्पादकीय टीम बहाई की पात्र है।

योगेंद्रसिंह 'कोरिडॉर', वरिष्ठ पत्रकार

पाठक-पीठिका

नई दुनिया, इन्दौर में प्रकाशित समीक्षा

दुर्लभ दस्तावेजों व छायाचित्रों का उपहार 'रेल दर्पण'

पश्चिम रेलवे की लोकप्रिय गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' की गणना देश की चुनिंदा श्रेष्ठ गृह पत्रिकाओं में की जाती है। यह पत्रिका पठनीय कलेवर, उत्कृष्ट साज-सज्जा और श्रेष्ठ गुणवत्ता के उन सभी पहलुओं से भरपूर रहती है, जो किसी भी पत्रिका को पुरस्कृत करने के मापदंड पर खरे उतरते हैं। इसी खुशी के कारण पिछले 11 वर्षों से यह शानदार पत्रिका 25 से अधिक राष्ट्रीय पुरस्कार पाने करने का गौरव हासिल कर चुकी है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय गृह पत्रिका प्रतिযোগिता में वर्ष 2010-11 का प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार 'रेल दर्पण' को दिया गया। यह पुरस्कार हिन्दी दिवस के अवसर पर 14 सितम्बर, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित एडु गरिमाय कार्यक्रम में भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा प्रदान किया गया। इसे पश्चिम रेलवे के तत्कालीन महाप्रबंधक श्री आर.सी. अग्रवाल ने ग्रहण किया। इस अवसर पर प्रधान सम्पादक एवं मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शरत चंद्रायन भी उपस्थित थे। इस बार की 'रेल दर्पण' पत्रिका पश्चिम रेलवे की स्थापना के 'हीरक जयंती वर्ष' एवं वडोदरा के पास स्थित देश की पहली नैरोगेज प्रणाली की '150वीं जयंती' को समर्पित की गई है। यह अंक किसी विशेषांक के दायरे में न बंधता हुए साहित्यिक एवं ज्ञानवर्द्धक रचनाओं से

सराबोर है। देश की पहली नैरोगेज प्रणाली के दुर्लभ छायाचित्रों, दस्तावेजों और रोचक जानकारी पर आधारित विशेष फोटो फीचर एवं लेख इस पत्रिका की गुणवत्ता में चार चांद लगा रहे हैं। तत्कालीन महाप्रबंधक श्री अग्रवाल के विशेष लेख से पाठक इस बात से अवगत होते हैं कि किस तरह पश्चिम रेलवे ने संरक्षा, सेवा और गति के अपने ध्येय मंत्र को आत्मसात कर इसे व्यावहारिक रूप में भी चरितार्थ किया है। सभी नियमित स्तम्भों के साथ 'विशेष अतिथि रचनाओं' की महफिल को मशहूर कवि श्री यशुप पांडेय ने सजाया है, तो अंग्रेजी खंड में लोकप्रिय गायक श्री शान्तनु मुखर्जी उर्फ 'शान' से उनके जीवन में रेल की अहमियत पर रोचक बातचीत प्रकाशित की गई है। 'कथा-कुंज' में श्रीमती इंदु सिन्हा का 'खुशनुमा एहसास', श्री रघुवीरसिंह 'कर्मयोगी' की 'अंगनौआ तुलसी' और श्री कैलाश सेंगर की 'रात' कहानियाँ पठनीय होने के साथ-साथ उत्कृष्ट भी हैं। 'व्यंग्य वीथिका' में डॉ. ताराचंद शर्मा का 'संकेतक', श्री राजेन्द्र देवधरे 'दर्पण' का 'किस्का पत्र-किस्के नाम?' एवं श्री रवीन्द्र कुमार का 'विज्ञान गरी' के 'व्यंग्य ताज़गी से भरे हैं।' अभिनंदन के हकदार 'खंड' में पश्चिम रेलवे के प्रेरणा के स्रोत रेलकर्मियों का जिक्र किया गया है, जिन पर पश्चिम रेलवे को नाज़ है।

✍ विनोद श्रीवास्तव, वरिष्ठ स्तम्भकार

गुजरात वैभव, अहमदाबाद में प्रकाशित समीक्षा

सुंदर उपवन का महकता पुष्प है 'रेल दर्पण' पत्रिका

'रेल दर्पण' का सितम्बर, 2011 का अंक देखने पर लगा, मानो किसी उपवन का महकता हुआ पुष्प हो। रंग बिरंगी छटा, सुंदर चित्रों से सुसज्जित एवं सामाजिक लेखों, गतिविधियों से अलंकृत यह अंक सभी के लिए पठनीय एवं संग्रहणीय है। कथा-कुंज, व्यंग्य वीथिका, आयाम, स्वास्थ्य चर्चा आदि स्तम्भों के कारण यह अंक बहुत ही रोचक लगता है। विशेष रूप से इसकी सुंदर छपाई एवं रंगों का संयोजन तथा भाषा की शुद्धता आदि ध्यानाकर्षक हैं। यह पत्रिका पश्चिम रेलवे की शान है। इतने पत्रकारिता क्षेत्र में नये-नये आयाम स्थापित किये हैं। प्रत्येक लेख के साथ फोटो का

संयोजन इसको और भी अधिक आकर्षक बनाता है। 'सिखियों के संसार' में महिलाओं के लेख ज्ञानवर्द्धक हैं। अंग्रेजी संस्करण भी पठनीय है और यह पत्रिका के महत्त्व में चार चांद लगा देता है। 'विशेष फोटो फीचर' में अतीत की घरोहर का सुंदर चित्रण है। रेलवे की गतिविधियों एवं इसके इतिहास का सजीव चित्रण इसमें किया गया है। 'रेल दर्पण' पत्रिका से परोक्ष या अपरोक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारी एवं कर्मचारी तथा सम्पादक मंडल के सदस्य बधाई एवं धन्यवाद के पात्र हैं, जिनकी मेहनत, लगन और विवेक से यह पत्रिका बहुत ही सुंदर तथा आकर्षक बन गई है।

हमारा महानगर, मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

कामयाबी के शिखर पर 'रेल दर्पण'

कामियाबी और लोकप्रियता के शिखर पर पहुँची पश्चिम रेलवे की पत्रिका 'रेल दर्पण' का नया अंक फिर ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक और पठनीय सामग्री लेकर आया है। 'रेल दर्पण' के सितम्बर, 2011 अंक में 'रेल दर्पण' को सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का राष्ट्रीय पुरस्कार दिये जाने का सचित्र उल्लेख है। महामहिम राष्ट्रपति के हाथों सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का सम्मान पाने वाली पत्रिका 'रेल दर्पण' ने हमेशा अपने अंकों में पठनीय, ज्ञानवर्द्धक और कलात्मक सामग्री के साथ-साथ पश्चिम रेलवे की उपलब्धियों तथा गतिविधियों को उल्लेखनीय स्थान दिया है। स्तरीय आलेखों और विवरणों के कारण 'रेल दर्पण' नितर निरन्तरती रही है। वर्तमान अंक में पश्चिम रेलवे के तत्कालीन महाप्रबंधक श्री आर.सी. अग्रवाल का विशेष आलेख पश्चिम रेलवे की पहल पर महत्वपूर्ण जानकारी देता है। इस विशेष लेख में 'हीरक जयंती' का गौरवपूर्ण अवसर, कामयाबी के नये कीर्तिमान और अधिक ट्रेनों के साथ बेहतर सम्बद्धता के साथ कई महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इस विशेष आलेख के अलावा सामयिक गतिविधियों के खंड में कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का सचित्र उल्लेख मिलता है, जो पाठकों को नई जानकारी देता है। पाठक-पीठिका 'खंड' में पाठकों के पत्र कई पृष्ठों से अवगत कराते हैं। नैरोगेज के 150 वर्षों पर विशेष आलेख भी पाठकों को ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करते हैं। पत्रिका के 'कथा-कुंज' खंड में श्रीमती इंदु सिन्हा, श्री रघुवीर सिंह और श्री कैलाश सेंगर की कहानियाँ के अलावा लघु कथाएँ भी

पाठकों को प्रभावित करती हैं। श्री सेंगर की कहानी 'रात' पाठकों को झकझोर देती है। 'स्वास्थ्य चर्चा' खंड में कोलेस्ट्रॉल, ब्रूमपान आदि से सम्बंधित जानकारीयों पाठकों के काफी लिए ज्ञानवर्द्धक हैं। नैरोगेज के 150 वें वर्ष के उपलक्ष्य में 'विशेष फोटो फीचर' भी संग्रहणीय बन पड़ा है। इस अंक में 'व्यंग्य-वीथिका' और 'काव्यात्मक अभिव्यक्ति' खंड में प्रकाशित आलेख एवं कविताएँ लोगों का मन मोह लेती हैं।

श्री रवींद्र कुमार का व्यंग्य 'विज्ञान गरी' के 'रोचक है। इसके अलावा श्री राजेन्द्र देवधरे का 'दर्पण' और डॉ. ताराचंद शर्मा का व्यंग्य भी पाठकों को प्रभावित करते हैं। इस अंक में सुश्री आरणा रावत, श्री ब्रजभूपण कुमार और श्री आशकरण अटल की कविताएँ पाठकों को बांधे रखती हैं। इसके अलावा अन्य कविताएँ भी अपना प्रभाव छोड़ने में सफल रही हैं। श्री रामनिवास शर्मा की कविता की कुछ पंक्तियाँ देखिये- 'हो जाओगी रुसवा गर गैर को चाहोगी, जो पृष्ठोंगे सभी, दिल में मेरे जख्म का क्या है?' इसके अलावा इस अंक में फीचर्स, 'सांस्कृतिक हलचल' और 'सिखियों का संसार' आदि खंड बेहद ज्ञानवर्द्धक बन पड़े हैं। कुल मिलाकर यह अंक संग्रहणीय बन पड़ा है। इस अंक की सफलता के लिए प्रधान सम्पादक एवं मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शरत चंद्रायन और वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक श्री गजानन महपुरकर सहित सम्पादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

✍ गुलजार हुसैन, वरिष्ठ पत्रकार

प्रातःकाल, मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

रेल दर्पण: उपलब्धियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति

'रेल दर्पण' पश्चिम रेलवे के स्थापना काल से वर्तमान तक की उपलब्धियों का विहंगावलोकन करती उच्च कोटि की गृह पत्रिका है। सितम्बर, 2011 अंक विकास क्रम में तिथियों और आंकड़ों की बहुलता के बावजूद सचित्र रचनात्मक प्रस्तुति से पाठकों के लिए रोचकता से भरा संग्रहीत अंक बन गया है। सम्पादकीय में पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रान ने पश्चिम रेलवे पर पत्रिका प्रकाशन ने इतिहास पर प्रकाश डालते हुए 1923 में प्रकाशित पहली मैगजीन 'बीबीएंडसीआई' से लेकर 2000 में 'रेल दर्पण' के प्रवेशांक तक के सफरनामे पर संक्षेप में महत्वपूर्ण जानकारी दी है। पश्चिम रेल के तत्कालीन महाप्रबंधक श्री आर.सी. अग्रवाल ने अपने लेख 'संरक्षा, सेवा और गति के ध्येय मंत्र पर अमल-पश्चिम रेलवे की संरक्षा पहल' के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के अस्तित्व में आने से लेकर इसके क्षेत्र, इसकी सेवाओं के विस्तार और यात्री सुविधाओं के संदर्भ में रिकार्ड उपलब्धियों का वर्णन करते हुए बुनियादी संसाधनों के विस्तार के ज़रिये बहुमुखी विकास का ब्योरा प्रस्तुत किया है। महाप्रबंधक ने यात्री सुविधाओं को पश्चिम रेलवे की सर्वोच्च प्राथमिकता बताते हुए टिकटिंग प्रणाली के विभिन्न रूपों की उपयोगी जानकारी दी है। श्री अग्रवाल ने अंतर्राष्ट्रीय मानक संगठन द्वारा पश्चिम रेलवे के सभी 6 मंडलों में आपदा प्रबंधन कार्यों की योजना बनाने एवं मॉनिटरिंग करने वाली गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के

लिए पश्चिम रेलवे के संरक्षा विभाग को आईएसओ 9001:2008 प्रमाण-पत्र मिलने और रिमोट रेडियो कंट्रोल के ज़रिये वितरित होने वाली ऊर्जा प्रणाली से सुसज्जित इंजनों द्वारा पहली सबसे लंबी मालगाड़ी पायथन ट्रेन चलाने को महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया है।

'सामयिक गतिविधियों' के तहत विभिन्न पुरस्कारों की चित्रमय झलकियाँ मंडलों की उपलब्धियों से संक्षेप में परिचित करती हैं। पत्रिका में नैरोगेज के इतिहास के बारे में तिथिवाच एवं क्रमिक विकास के विभिन्न पड़ावों की विस्तार से जानकारी मिलती है।

चित्रों की शृंखला में 16 अप्रैल, 1853 को बोरीबंदर से ठाणे स्टेशन के बीच चली पश्चिम की पहली रेलगाड़ी चलने की ऐतिहासिक घटना, छोटी रेलगाड़ी को खींचते दो बैलों की जोड़ी और आधी सवारी और आधी मालगाड़ी के चित्र मन को प्रफुल्लित कर देते हैं। सभी आयामों को समेटने की प्रक्रिया के तहत जीवन में सामाजिक और पारिवारिक दायित्व के बीच अंतर्भावनाओं का 'कथा कुंज', 'रोमांच से सावधान' करती 'स्वास्थ्य चर्चा' एवं आडम्बरो पर प्रहार करती 'व्यंग्य-वीथिका' के साथ 'वैचारिकी' तथा 'संखियों का संसार' में लज्जाई ज्ञान के नुस्खों के समावेश से पत्रिका को विशिष्टता प्राप्त हो गयी है। 'जिंदादिली और उल्लास के हरकारे' में रेल कर्मियों की प्रतिभाओं से परिचित कराने का अच्छा प्रयास किया गया है। पत्रिका के पृष्ठ, मुद्रण और चित्र सभी उच्च कोटि के हैं।

अतीत का आईना भविष्य का दर्पण

जागरूक टाइम्स, मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का यह अंक पश्चिम रेलवे के स्थापित अतीत का आईना एवं स्थापित भविष्य का दर्पण है। 'रेल दर्पण' पाठियों की सेवा में अहर्निश तत्पर रेलकर्मियों की भावनाओं और प्रतिभाओं को प्रमत्त प्रदान करती एक आदर्श पत्रिका है। वास्तव में 'रेल दर्पण' 'रेलकर्मियों' की रचनात्मकता का दर्पण है। रेलकर्मियों के कवि हृदय एवं लेखन क्षमता तथा कुशल सम्पादन, समसामयिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों, इतिहास एवं भविष्य के साथ-साथ बेहतरीन पठनीय सामग्रियों के प्रस्तुतीकरण का ही परिणाम है कि 'रेल दर्पण' देश में प्रकाशित अन्य गृह पत्रिकाओं की अपेक्षा कहीं ज्यादा लोकप्रिय एवं पाठकों की पसंदीदा पत्रिका है। हिंदी दिवस पर महामहिम राष्ट्रपति द्वारा मिला पुरस्कार इसका जीवंत प्रमाण है। पत्रिका के प्रारम्भ में तत्कालीन महाप्रबंधक श्री आर.सी. वर्मा का लेख 'संरक्षा, सेवा और गति के ध्येय मंत्र पर अमल-पश्चिम रेलवे की सार्वक पहल' एक सारगर्भित रचना है, वहीं पश्चिम रेलवे के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में हुए निष्पन्न कार्यों एवं आयोजनों की चित्रमय प्रस्तुति सुनहरे भविष्य की झांकी प्रस्तुत करती है। 'कथा-कुंज' में श्रीमती इंदु सिन्हा की कहानी 'खलनामा एहसास' आधुनिकता की आड़ में कृत्रिम स्वच्छंदता के बीच आदर्श संस्मरण एवं भावनाओं को प्रस्तुत करती चरणोत्कर्ष रचना है। श्री कैलाश सेगार की कहानी 'रात' अंतर्भूत को झकृत कर देने वाली पारिवारिक निर्णयों एवं खुद की भावनाओं के बीच तारतम्य बनाते ईमान के भावों को प्रकट करती बेहद मार्मिक रचना है। इसके साथ ही पत्रिका के स्थायी कॉलम स्वास्थ्य चर्चा, विविधा, वैचारिकी, व्यंग्य वीथिका, जिंदादिली एवं उल्लास के हरकारे तथा अग्रवाल इसकी गुणवत्ता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वैसे तो पत्रिका का सम्बंध पढ़ने से होता है, लेकिन पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का जीवन अंक दुर्लभ छायाचित्रों के कारण हाथ में आते ही सम्प्रापित करता है। पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्रों के अंतर्गत आधी सवारी और आधी मालगाड़ी सहित आह्लादित करने वाले कई दुर्लभ चित्र हैं। नैरोगेज के 150 वर्षों

के पूरे होने पर प्रस्तुत फोटो फीचर तथा साथ ही पश्चिम रेलवे के चर्चिगत स्थित मुख्यालय एवं पूर्व रेलों के बोध चिह्न पत्रिका को आकर्षक और संग्रहीत बनाते हैं। 'काव्यात्मक अभिव्यक्ति' में सुश्री आराधना रावत की कविता 'परिवर्तन' आज के लालच भरे माहौल पर कटाक्ष करने की आदर्श रचना है। श्री शैलेश आर. गोयल की कविता 'जीवन और क्रिकेट का नाता' क्रिकेट भाषा में जीवन के यथार्थ को दर्शाती एक रोचक कृति है, वहीं सुप्रसिद्ध कवि श्री आशुकर अटल की रचना 'आम और केला' सुलभता और आसानी से उपलब्धता वाली वस्तु को उपयोगिता के बावजूद सम्मान में मिलने की वास्तविकता का चित्रण करती एक सार्वभौमिक रचना है। 'संखियों के संसार' में श्रीमती अर्चना महतपुरकर की शैशाल कोविंदर भाकरवड़ी बनाने की विधि इस भागमभाग भरी जिंदगी में कामकाजी महिलाओं के लिए बेहद उपयोगी है। इसके साथ ही अंग्रेज़ी खंड में प्रसिद्ध गायक श्री शान का साक्षात्कार पत्रिका को उत्कृष्टता प्रदान करता है। मुख्य जनसमर्थक अधिकारी एवं पत्रिका के सम्पादक श्री शरत चंद्रान का लेख WAR OF CURRENT... व्यापक सोच की व्यावहारिकता के साथ बेहतरीन प्रस्तुति है। पत्रिका में विशेष अतिथि रचनाकार श्री मधु पाण्डेय की हास्य-व्यंग्य कविताएँ आज के माहौल पर कटाक्ष करती एवं वास्तविकता का चित्रण करती आदर्श रचनाएँ हैं। पत्रिका की प्रिटिंग, साज-सज्जा, डिज़ाइन एवं लेखों का चयन तथा उनका बेहतरीन प्रस्तुतीकरण बेहद आकर्षक है। इतनी शानदार पत्रिका के प्रकाशन के लिए प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रान, वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक श्री गजानन महतपुरकर, कार्यकारी सम्पादक श्री सी. नितिन कुमार डेविड, श्री होरमज मोहता एवं उनकी पूरी टीम ब्याई की पात्र है। अंत में 'रेल दर्पण' के लिए इसी अंक में प्रकाशित एक लाइन काज़िक रचना चाहूँ...।

“इतिहास की बुनियाद पर खड़ी है, वर्तमान की सुंदर इमारत।

बेहतर प्रस्तुतीकरण के चुनौत द्वाड़े लिखेंगे, उज्ज्वल भविष्य की इमारत।”

अर्जुन कुमार राय, संरक्षण सम्पादक

निस्वरती जा रही है 'रेल दर्पण'

नवभारत, मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

पश्चिम रेलवे द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'रेल दर्पण' अंक दर अंक निखरती जा रही है। पत्रिका के सितम्बर, 2011 के अंक में रेलवे की प्रमुख गतिविधियों का लेखा-जोखा तो सम्पादित है ही, साथ ही रेल परिवार में विद्यमान सृजनशील प्रतिभाओं की रचनात्मकता को भी मजबूती के साथ प्रस्तुत किया गया है। 'बैल खींचा' करते थे रेल की, कभी ऐसा भी था एक जमाना, मगर अब है बिजली की ट्रेन का दौर, कल क्या होगा किसने जाना?... पत्रिका के अग्रलेख में पिरोगी गार्ड उपरोक्त पंक्तियों ने केवल पश्चिम रेलवे की उड़ान को दर्शा रही हैं, बल्कि अग्रणी से अभिनव की तरफ बढ़ते कदमों को भी रेखांकित कर रही हैं। प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन द्वारा लिफ्टिड स्पेशल फीचर तो वाकई में संग्रहणीय है। नैरोगेज पर लिखा गया श्री विमलेश चंद्र का लेख जहाँ इतिहास के पन्नों को पलट रहा है, वहीं 'कथा कुंज' में श्रीमती इंदु सिन्हा, श्री

रघुवीर सिंह 'कर्मयोगी' और श्री कैलाश सेंगर की कथानकाना 'खुशनुमा एहसास' करा रही है। 'लघु कथाओं' और सुडोकू से पत्रिका में विविधता पर गई है। 'स्वास्थ्य चर्चा' में डॉ. के.जी. शारदा, डॉ. के.सी. गुप्ता, डॉ. इयाम फिशोर प्रसाद द्वारा दिये गये टिप्स जितने उपयोगी प्रतीत हो रहे हैं, 'काव्यात्मक अभिव्यक्ति' उतनी ही सामर्थ्यक है। अमिताभ जी का फिल्मो सफर 'पत्रिका को फिल्मो पुट दे रहा है। श्री शान का साक्षात्कार भी बहुत सुरीला है। विशेष रचनाकार के रूप में भी मधुप जी ने सच्चाई को यथार्थ के धरातल पर उकेर कर इस अंक को साहित्य के रस से सराबोर कर दिया है। कुल मिलाकर कॉर्पोरेट हित के साथ जनहित से जुड़ी झलकियों को अपने आप में समेटे 'रेल दर्पण' का यह अंक गृह पत्रिका की श्रेणी में मिले राष्ट्रीय पुरस्कार की सार्थकता को परिलक्षित कर रहा है।

कमल मिश्र, वरिष्ठ पत्रकार

'रेल दर्पण' का पिछला अंक पढ़कर मन झुप उठा। पहली नज़र में कवर ने ही मन मोह लिया। 'रेल दर्पण': एक गौरवशाली तिलक नैरोगेज प्रणाली की 150वीं सालगिरह पर विशेष सामग्री ने भारतीय रेलवे के इतिहास को जैसे सापने लाकर खड़ा कर दिया। तस्वीरें भी ऐसी थीं, जैसे रेलवे का अतीत जीवंत हो उठा हो। अंक के पलटते ही पिछले पेज पर श्री मधुप पांडेय के व्यंग्यों की तीखी धार कर्त्ती हँसिकाओं ने खूब गुदगुदाया। 'रेल दर्पण' जैसी पत्रिका से जुड़ना हमारे लिए गौरव की बात तो है ही, लेकिन इसे देश की सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का राष्ट्रीय पुरस्कार मिलने पर सिर गर्व से और ऊँचा गया है। शत-शत बधाइयाँ! इस सम्मानजनक उपलब्धि ने 'रेल दर्पण' को हमारे माथे का पावन और गौरवशाली तिलक बना दिया है। 'कथा-कुंज' में कहानी 'आँनीआ तुलसी' ने मन को छू लिया। 'रेल दर्पण' में ऐसी कहानियाँ शामिल करने के लिए आपका। बेजोड़ कहानी है। 'व्यंग्य वीथिका' की रचनाओं ने खूब हँसाया। 'काव्यात्मक अभिव्यक्ति' में माता सरस्वती की वंदना सच में बेहद पावन रचना है,

'रेल दर्पण': एक गौरवशाली तिलक

पढ़कर हृदय पवित्र हो उठा। 'स्वास्थ्य चर्चा' में चिकित्सकों के नुस्खे बड़े उपयोगी हैं। आगे भी ऐसे हेरों टिप्स मिलते रहने की उम्मीद बंध आई है। गायक श्री शान से बातें अच्छी लगीं। ये जान कर बहुत अच्छा लगा कि हमारे कलाकारों की रुचि कला के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों से भी है। श्री अमिताभ बच्चन के सफर पर तुकबंदी हल्की-फुल्की गुदगुदी सी भली लगी। सप्त-सामर्थ्यक गतिविधियों की जानकारीयों में पश्चिम रेलवे की भौतिक गतिविधियों के साथ-साथ, अन्य रचनाओं में उसके सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास तथा सकारात्मक बदलाव से रूबरू कराने में 'रेल दर्पण' शत-प्रतिशत कामयाब रही है। इस उपलब्धि-काव्यात्मक के लिए हार्दिक बधाई। एक बार फिर से राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए अभिनंदन। भविष्य में ऐसी ढेर सारी उपलब्धियाँ हासिल करने की उम्मीद के साथ शुभकामनाएँ भी।

बी.के. मिश्रा, प्रबंध निदेशक, लोपैथ एडवर्टाइजिंग एजेंसी, मुंबई

काव्यात्मक शीर्षकों ने किया प्रभातित

'रेल दर्पण' का सितम्बर अंक बहुत अच्छा बन पड़ा है। विभागीय पत्रिका में भी इतना अच्छा सम्पादन हो सकता है, इसकी गवाह है इसमें शामिल की गयी सामग्री। मुझे विशेष फीचर और उनके काव्यात्मक कैफ़ान-शीर्षक अच्छे लगे। पश्चिम रेलवे की गतिविधियों से भी परिचित कराता है यह अंक। सभी साहित्यिक रचनाएँ सरीय लगीं। एक और बात-सितम्बर अंक में प्रकाशित मेरी कहानी 'रात' पर मुझे पाठकों की काफी प्रतिक्रियाएँ एवं बधाइयाँ मिलीं। इसके लिए मेरा 'आभार' शीकार करें।

कैलाश सेंगर, वरिष्ठ लेखक एवं कथाकार मुंबई

रोचक तथ्यों से भरपूर है 'रेल दर्पण'

आपकी गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' सितम्बर, 2011 प्राप्त हुई। पत्रिका भेजने के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक और मनमोहक है। पत्रिका द्वारा आपके संगठन में होने वाली गतिविधियों की ज्ञानबद्ध जानकारी मिलती है और रेलवे से सम्बंधित रोचक तथ्यों का पता चलता है। पत्रिका में भरपूर साहित्यिक सामग्री दी गयी है और उपयोगी स्वास्थ्य चर्चा भी की गई है। पत्रिका में दिये गये फोटो फीचर इसकी शोभा में चार-चांद लाते हैं।

उमा जयकुमार, प्रबंधक (उद्यमभाषा), राष्ट्रीय विमान पतन प्राधिकरण, मुंबई

'रेल दर्पण' के सितम्बर, 2011 के अंक को पढ़कर सिर्फ यह कहना कि 'बहुत अच्छा लगा', छोटी बात होगी। सबसे पहले हम महाप्रबंधक, प्रधान सम्पादक, वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक और सभी कार्यकारी सम्पादकों को इस साल का 'राष्ट्रीय पुरस्कार' 'रेल दर्पण' को मिलने की खुशी में हार्दिक बधाई देना चाहते हैं। इस अंक में महाप्रबंधक महोदय द्वारा अति व्यस्त कार्यप्रणाली के बावजूद लिखा गया 'विशेष लेख' पढ़कर कुछ ऐसे बातों से हम वाकिफ हुए, जो हमें पता नहीं था। पाठक ऐसी अनूठी रचनाएँ सदैव पढ़ना चाहेंगे। 'रेल दर्पण' के इस अंक पर प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन की गहरी छाप दिखाई दी। इस बार का अंक बड़ा अनूठा भी लगा। सम्पादकीय हो या फिर 'रेल दर्पण' को मिले पुरस्कार के क्षण, मशहूर गायक श्री शान का इंटरव्यू हो या डीसी से एसी

वैचारिक फूलों का गुलदस्ता है 'रेल दर्पण'

कवचन पर लिखा उम्दा आर्टिकल, जिसके ज़रिये हम मुख्य जनसमर्थक अधिकारी की लेखनी से भली-भाँति परिचित हुए। आशा है, भविष्य में भी हमें कुछ और रोमांचक विषयों पर ऐसे ही रोचक लेख पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। श्री आशरकर अटल जी की कविता इस अंक में वैसी ही है, जैसे अंग्रेज़ों में कहते हैं 'CHERRY ON THE TOP'! अंत में इस अंक से प्रेरित होकर हम भी कुछ पंक्तियाँ लिखने का प्रयास कर रहे हैं...

''दर्पण है ये रेल का बहुत अच्छा, हर पन्ना लगता बिल्कुल सच्चा।

पढ़कर इस अंक की चूड़ा, जवान या बच्चा,

पायेगा इसे, जैसे हो रंग-बिरंगे वैचारिक फूलों का गुलदस्ता।।''

रवि कपूर, रीजेंट मैनेजर, प्रभात एडवर्टाइजिंग, मुंबई

रेल दर्पण की साज-सज्जा एवं विषय वस्तु अनुकरणीय

'रेल दर्पण' का सितम्बर, 2011 का अंक प्राप्त हुआ एवं आवरण पृष्ठ पर महामहिम राष्ट्रपति महीन्द्रा का कर कमलों से महाप्रबंधक महीन्द्रा की इस गृह-पत्रिका के लिए सर्वश्रेष्ठ पत्रिका का पुरस्कार प्राप्त करते हुए देखकर हृदय गद्गद हो गया। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषय वस्तु बहुत ही अनुकरणीय है, जिसके लिए सम्पादक मंडल तहे दिल से बधाई का पात्र है। महाप्रबंधक महीन्द्रा का लेख सभी रेल कर्मियों को लक्ष्य प्राप्त के लिए उत्साहित करने वाला है। पत्रिका में पश्चिम रेलवे की विभिन्न गतिविधियों की बड़ी ही सुंदर ढंग से संजीवा एवं चिरोया गया है तथा पत्रिका की पढ़ने

विशेष प्रतिक्रिया



तथा छाया चित्र देखने से पश्चिम रेल की प्रगति की दिशा और दिशा मालूम होती है। पत्रिका के माध्यम से पश्चिम रेलवे के प्रविष्य के साथ-साथ मृतकाल से भी रूबरू हुआ जा सकता है। इस पत्रिका में तकनीकी, सांस्कृतिक, खेल-कूद, कथा और साहित्य सहित लेखन की सभी विधाओं के बारे में जानकारी मिलती है। मंडार विभाग की पत्रिका में समुचित स्थान दिये जाने के लिए मैं सम्पादक मंडल का शुक्रिया अदा करता हूँ। यह पत्रिका रेल परिवार के साथ दिनों-दिन उन्नति के नित नये आयाम हासिल करे, वही कामना करता हूँ।

काली रांकर, मुख्य मंडार निष्पक्ष, वरिष्ठ

देश की सर्वोत्तम गृह पत्रिका का सम्मान बड़ी उपलब्धि

यह जानकारी अपार प्रसन्नता हुई कि अपनी गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' को देश की सर्वोत्तम गृह पत्रिका होने का गौरव प्राप्त हुआ है। इस उपलब्धि के लिए 'रेल दर्पण' को महामहिम राष्ट्रपति द्वारा सर्वोच्च सम्मान से नवाजा गया है। यह हम सबके लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। धरेल पत्रिका के दायरे में ये शानदार मुकाम हासिल होना न केवल हर्ष की बात है, बल्कि अत्यंत उत्साहवर्द्धक भी है। उत्साह इस बात का कि हम सबको मिलकर इसकी गुणवत्ता और गरिमा बनाये रखनी है। इस गौरवशाली उपलब्धि के लिए प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन एवं वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक श्री गजानन महतपुरकर के साथ-साथ पूरे 'रेल दर्पण' परिवार को शत-शत बधाइयाँ साथ ही प्रविष्य में ऐसी ही अनेक उपलब्धियों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

मिल कुमार सिंह,

टीकमल मैनेजर, झोपट एक्स्टेंडिंग एजेंट, मुंबई

'रेल दर्पण' को राष्ट्रीय पुरस्कार पर हार्दिक अभिनंदन

14 सितम्बर, 2011 का एक अविस्मरणीय महत्वपूर्ण दिन, जिस दिन पश्चिम रेलवे के इतिहास के पन्नों में एक और गौरवशाली पन्ना जुड़ गया, जब भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल के कर कमलों द्वारा देश की सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' के लिए पश्चिम रेलवे के तत्कालीन महाप्रबंधक श्री आर.सी.अग्रवाल को पुरस्कृत किया गया। मैं मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शरत चंद्रायन, वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक श्री गजानन महतपुरकर तथा 'रेल दर्पण' से जुड़े सभी व्यक्तियों का तहे दिल से अभिनंदन करता हूँ, जिनकी कड़ी मेहनत तथा महत्वपूर्ण योगदान के कारण पश्चिम रेलवे को यह महत्वपूर्ण सम्मान प्राप्त हुआ।

एन.एस. उग्रवाल,

उप सचिव (सामान्य), पश्चिम रेलवे, वरिष्ठ

पश्चिम रेलवे द्वारा पिछले कुछ वर्षों से प्रकाशित 'रेल दर्पण' पत्रिका

गौरवशाली इतिहास की परिचायक - 'रेल दर्पण'

का पिछला अंक काफी सराहनीय रहा है, जिसमें एशिया एवं भारत की प्रथम नैरोगेज रेल सेवा के 150 गौरवपूर्ण वर्षों की ऐतिहासिक गाथा को बखूबी दर्शाया गया है। गौरवपूर्ण एवं वैभवशाली परम्पराओं का निर्वाह करते हुए भारतीय रेल प्रणाली को बुलंदियों तक पहुँचाने में पश्चिम रेलवे ने हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। 'रेल दर्पण' के सितम्बर, 2011 अंक में बुनियादी संसाधनों के विस्तार एवं यात्री सुविधाओं की उपयोगी जानकारी दी गई है, जिससे पता चलता है कि मुंबई के उपनगरीय ट्रेनों की क्षमता बढ़ाकर

बन के लिए अंधेरी और अंतर ब्रिज के लिए अनुपति देकर पश्चिम रेलवे ने जनहित के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है। संक्षाल, सेवा और गति के ग्रैय मंत्र पर अमल करने वाली पश्चिम रेलवे का हम शतशः अभिनंदन करते हैं। 'रेल दर्पण' के प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन की कार्यशैली यात्री संगठनों के साथ हमेशा समन्वय की रही है। उनके द्वारा 'रेल दर्पण' के उत्कृष्ट सम्पादन के लिए हार्दिक बधाई।

कैलाश वर्मा,

महामंत्री, पश्चिम रेलवे मंडल रेल उपयोगकर्ता सलाहकार समिति, मुंबई

'रेल दर्पण' निश्चित रूप से एक श्रेष्ठ पत्रिका है। सांस्कृतिक हलचल के अंतर्गत छपे फोटो

'रेल दर्पण' है एक श्रेष्ठ पत्रिका

लाजबाब हैं। क्या बात है? समझते हैं उनकी मुरली की तान', पेशे से रेलवे इंजीनियर, कलम से कुशल लेखक आलीशान हैं। ऐसी अनेक प्रतिभाएँ हमारी रेलवे में हैं। उन्हें प्रकाश में लाना बहुत प्रशंसनीय होगा। 'पूर्वज रेलों के बोध चिह्न' है प्रतीक गरिमा का, आइये, करें दीदार अतीत की इस महिमा का! जैसी सामग्री पत्रिका को आकाश की ऊँचाई पर ले जाती है। 'पश्चिम रेलवे की इमारत है अतीत की धरोहर, आइये, इसके ऊँच अलग पहलुओं पर डालें नजर' शीर्षक से प्रकाशित विशेष फोटो फीचर नायाब प्रस्तुति है। ऐसी प्रस्तुतियाँ अवश्य होनी चाहिये। तस्वीर बोलती है - वाकई बोलती है। ऐसी तस्वीरों में उनकी भी तस्वीर होनी चाहिये, जिनका रेलवे में स्तर तो नीचा है पर उनका काम ऊँचा है। उनकी छोटी सी सेवा भी महान होती है।

पाँटी भी कभी पहाड़ पर चढ़ सकती है। 'सामयिक गतिविधियाँ' में कभी किसी पॉस्टल्ड मैम द्वारा हॉट एक्सल देख कर बचाई गई दुर्घटना की जानकारी भी दी जा सकती है। किसी गैंगमैन द्वारा 'रेल फ्रैक्चर' नोटिस कर टाली गई दुर्घटना की जानकारी भी दी जा सकती है। 'रेल दर्पण' की छपाई बहुत सुन्दर है। उसमें छपे फोटो बहुत सुन्दर हैं। जरूरत है सिर्फ एक नये ट्यूटिकोण की। एक आदर्श गृह-पत्रिका के रूप में राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाली देश की सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका के सम्पादक मंडल से यह अपेक्षा है कि इस पत्रिका में जिस तरह वरिष्ठ रेल अधिकारियों के छायाचित्र एवं उपलब्धियों को स्थान दिया जाता है, उसी तरह सामान्य रेलकर्मियों की गतिविधियों एवं उपलब्धियों को भी पर्याप्त तौर पर प्रकाशित किया जाये।

एस.के. मिश्रा,

वरिष्ठ प्रोफेसर (यातायात प्रबंधन), रेलवे इन्स्टीट्यूट, कोयंबा

Excellence commands recognition from the highest and the spirit of excellence, which is inspirational to all, is a spark that harbours the power to illuminate like a new dawn. This day indeed is one of those unforgettable moments in time which bear the sweet fruit of our hard unrelenting efforts. Please accept our heartiest congratulations on the momentous occasion for receiving a rare distinction and honour from

EXCELLENCE OF 'RAIL DAPAN' IS INSPIRATIONAL TO ALL

Her Excellency, The President of India. 'Rail Darpan' has always set standards in Hindi in-house periodicals, and indeed as an associate of

Railways, it gives us

great joy to extend our best wishes on the magazine winning the top award.

We are sure that it is just the beginning and several laurels await you in future.

Sandeep Nahar,
CEO, Anil Publicity Bureau, Indore

CONGRATS TO AN INFORMATIVE MAGAZINE !

It gives us great pleasure to send this message of congratulation for Western Railway's in-house magazine 'Rail Darpan' being awarded the National Award for Best In-house Magazine in Hindi. We appreciate the efforts taken by the Western Railway Staff in bringing out such an informative and entertaining magazine. Since the year 2000 the magazine has improved qualitatively and has thus gained appreciation and collected various awards. We once again take the opportunity to congratulate and appreciate the efforts taken in improving your magazine content, layout, cover page design etc. Heartiest Congratulations to the entire Western Railway Team.

Gaurav Mehra, Chief Executive Officer, Inter Publicity Pvt. Ltd., Mumbai

'RAIL DARPAN'-A WONDERFUL CREATIVE MAGAZINE

We at Prabhatam Advertising Agency take this opportunity to congratulate you & your team members from PR for winning the prestigious award for the House Journal 'Rail Darpan' which has been well conceived, well thought, well designed & well executed from first page till the last page. It's an honour to be awarded by our country's highest authority "The President of India". It's a dream come true for hard-working professionals who are always hungry to get congratulated in this way. Very few get this once in a life time opportunity. Our best wishes are always with you & your team. We wish you win many more awards & accolades in time to come for such wonderful creative work you have been doing.

Dinesh Gupta, Chairman, Prabhatam Advtg. Pvt. Ltd., Mumbai

'RAIL DARPAN' DEPICTS PHILOSOPHY OF THE RAILWAYS

We thank you for sending us the prestigious 'Rail Darpan' in-house magazine of the Western Railway. We eagerly await each issue to keep abreast with various activities in the organisation. It is very exhaustive and the contents are extremely educative. 'Rail Darpan' gives us a glimpse of the past and an insight not just into the philosophy of management and progress of the organisation, but also proves the fact that employee welfare and development are given high priority. It is noteworthy that the magazine also covers articles on health, general management, short stories as well as special interviews with well-known personalities. The icing on the cake is the literary contributions by doyens

of Indian literature. 'Rail Darpan' is truly the bond between employees and it has touched a new zenith which has been recognised by Western Railway winning a very prestigious award at the august hands of Her Excellency President of India. Sir, we feel that the frequency of 'Rail Darpan' should be increased, so there is a shorter gap between the events and the reports. Also, more pictures and a little less copy will make the issue even more reader friendly. We wish you greater success for 'Rail Darpan' and all your ventures and re-affirm our commitment to support all your efforts to the best of our abilities.

Raju Zaveri, Managing Director, Apex Advtg., Mumbai

NOTHING STOPS THE PERSON WHO DESIRES TO ACHIEVE !

We were very pleased to learn about Western Railway's in-house magazine 'Rail Darpan' having won the prestigious national award as the best in-house magazine in Hindi.

As was rightly said by Eric Butterworth "Nothing stops the man who desires to achieve. Every obstacle is simply a course to develop his achievement muscle. It's a strengthening of his powers of accomplishment." We congratulate you and your entire team's effort in making this happen.

K. Srikanth,
Account Director, Concept Advtg., Mumbai

દિવ્ય ભાસ્કર, મુંબઈ મેં પ્રકાશિત સમીક્ષા

પશ્ચિમ રેલવેના રેલ દર્પણ અંકને ઉત્તમ પ્રતિસાદ મળી રહ્યો છે

પશ્ચિમ રેલવેના રેલ દર્પણ અંકને ઉત્તમ પ્રતિસાદ મળી રહ્યો છે. આ વખતના અંકમાં જનરલ મેનેજર આરસી અગ્રવાલ શુભકામના સંદેશ સાથે આરંભ થાય છે. આ પછી મુખ્ય સંપાદક અને મુખ્ય જનસંપર્ક અધિકારી શરત ચંદ્રાચાર્યનો તંત્રીલેખ છે. જેમાં પશ્ચિમ રેલવેના અતિથિતી લઈને વર્તમાન સ્વરૂપ સુધી ઉત્તમ ચિતાર આપવામાં આવ્યો છે. અગ્રવાલનો ખાસ લેખ વિવિધ સિદ્ધિઓ વિશે વિગતવાર માહિતી આપે છે. રાષ્ટ્રપતિ પ્રતિભા દેવીસિંહ પાટિલને હક્કે અંકને રાષ્ટ્રીય પુરસ્કાર અપાયો તે વિશે પણ સચોટ વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. આમ, વિવિધ માહિતી સાથે ૧૨ અંગ્રેજી ને સમર્પિત છે. જેમાં બોલીવૂડના ગાયક શાન દ્વારા સામાજિક સંદેશ પણ અપાયો છે.